7

बिरानी बाड़ी : पश्चिमी राजस्थान में सीमित जल से तरबूज व खरबूजे की पारम्परिक खेती

जबरदान कविया, नरेन्द्र देव यादव एवं हरपाल सिंह

राजस्थान के उत्तरी भाग में जल स्तर बहुत नीचे होने के कारण यह सरलता से उपलब्ध नहीं

शुष्क क्षेत्रों में सूखा प्रबन्धन नीति एवं आय उपार्जन

संकलन एवं सम्पादन

हरपाल सिंह
मनजीत सिंह
नन्दलाल व्यास
जबरदान कविया
प्रताप नारायण

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली)

7 बिरानी बाड़ी : पश्चिमी राजस्थान में सीमित जल से तरबूज व खरबूजे की पारम्परिक खेती

जबरदान कविया, नरेन्द्र देव यादव एवं हरपाल सिंह

राजस्थान के उत्तरी भाग में जल स्तर बहुत नीचे होने के कारण यह सरलता से उपलब्ध नहीं हो पाता है। यहाँ के निवासी तलइयाँ, टांके तथा अन्य तरह से वर्षा जल संग्रहण कर अपनी तथा पशुधन की आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। इस क्षेत्र में सीमित जलापूर्ति से सीमित सब्जी उत्पादन करना भी कुछ जातियों का व्यवसाय रहा है। सीमित जल से सब्जी उत्पादन में तरबूज व खरबूजे की खेती मुख्य रही है। राजस्थान के रेतीले भू–भाग में इनकी खेती करना भी एक विशेष तकनीक है। इस तरह तरबूज व खरबूजे की खेती करने का पारम्परिक ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी यहाँ के किसानों को मिलता रहा है। बिरानी बाड़ी लगाने के पारम्परिक ज्ञान को बीकानेर के आसपास के गाँव गिगासर, सागर तथा कनासर आदि से कलमबद्ध किया गया है। वैज्ञानिक दृष्टि से देखने पर किसानों के लिये यह तकनीक बहुत उपयोगी पाई गई क्योंकि भूमिगत सीमित जल की सीमितता को देखते हुए न केवल राजस्थान बल्कि अन्यत्र जहाँ भी सीमित जल उपलब्ध है वहाँ ऐसी खेती को प्रोत्साहन दिया जाए तो छोटे व गरीब किसान जीविका चला सकते हैं। बिरानी बाड़ी से तरबूज व खरबूजे की खेती करने में भू–संरक्षण, नमी–संग्रहण, जल–व्यवस्था तथा मौसम की अनुकूलता आदि भी इस पारम्परिक तकनीकी ज्ञान में शामिल है।

बिरानी बाड़ी लगाने का प्रचलन राजस्थान में बीकानेर जिले के गाँवों में ही अधिक है। मुख्यतः माली लोग तरबूज व खरबूजे की खेती बहुत ही सीमित जल से करते हैं। बीकानेर संभाग के कई गाँवों में बिरानी बाड़ी लगाकर सब्जी उत्पादन किया जाता था। विगत तीन दशकों में नलकूपों की सुविधा होने से नहरी क्षेत्र में यह परम्परा कम हो रही है। बिरानी बाड़ी लगाने का पारम्परिक ज्ञान माली समाज के अलावा अन्य जातियों जैसे नायक, कुम्हार तथा संत लोगों ने भी लिया है।

रेगिस्तानी क्षेत्र में बिरानी बाड़ी लगाना वरदान बन सकता है। किसान सूखे की स्थिति में भी कम से कम पानी के उपयोग से आमदनी ले सकता है। प्रति हैक्टर क्षेत्रफल में बिरानी बाड़ी की फसल लेने में होने वाली आमदनी तथा व्यय का ब्यौरा तालिका 7.1 में दिया गया है। आय–व्यय के आधार पर प्रति हैक्टर शुद्ध लाभ 12,820 रूपये (वर्ष 2004) आता है। अतः किसान बिरानी बाड़ी की खेती कर सूखे की स्थिति में भी लगभग 10 – 12 हजार रूपये प्रति हैक्टर का शुद्ध लाभ कमा सकता है।

बिरानी बाड़ी लगाने का शुभारम्भ शिवरात्रि से तरबूज व खरबूजे की बुवाई करके करते हैं। बिरानी बाड़ी निम्न प्रकार से लगाते हैं –

बिरानी बाड़ी लगाने के लिये पहले वर्ष वर्षा के अंतिम दिनों में खेत में दो बार हैरो चलाकर जमीन जोतने से शुरूआत करते हैं। सर्दियों में वर्षा होने पर उसी खेत को हैरो से जोतकर पाटा देकर खेत खाली रखते हैं।

- शिवरात्रि से पहले (फरवरी) खेत में 1 मीटर व्यास के थाले (कोरिये) पंक्ति से पंक्ति की दूरी 1 मीटर रखते हुए जमीन को पोली बनाते हैं।
- थालों की पंक्तियाँ संभवतः दक्षिण–पश्चिम दिशा के विपरीत बनाते हैं।
- थाले बनाने की प्रक्रिया के साथ वायु गतिरोधक, छोटी पंक्तियाँ, थालों की पंक्तियाँ के बीच में सूखी सिणियाँ व खींप (वनस्पति) को दबाकर बनाते हैं ताकि गर्मियों में रेत न उड़े तथा बेलें उस पर चढ़ जाएं (चित्र 7.1)।
- बीज को बुवाई से पहले उपचारित करते हैं। उपचारित करने के लिये बीज में राख मिलाकर टाट पट्टी में पोटली बांध कर दो दिन तक भिगोकर फिर उसे जमीन में दबा देते हैं तथा तीसरे दिन सुबह बुवाई कर देते हैं। कुछ किसान बीज को केवल दो रात पानी में भिगोकर रखते हैं। बीज का इस तरह उपचार करने से इसमें जड़े तथा अकुंरण का फुटाव हो जाता है।
- बीज की बुवाई करते समय हर थाले के बीच में 1 लोटा (4 लीटर) पानी ड़ालकर गीली रेत हटाकर 15 से. मी. गहरा गड्ढा बना देते हैं। इसमें अंकुरित हुए बीज ड़ालकर ऊपर हटाई हुई गीली रेत से पाट देते हैं तथा थोड़ी सी सूखी रेत ऊपर डाल देते हैं ताकि नमी न उड़ जाये।
- लगभग 5 दिन बाद बीज उगने लगते हैं तथा 8 दिन में अकुंरित होकर जमीन से बाहर आ जाते हैं।
- जमीन से निकले हुए हर पौधे के चारों ओर मिट्टी को पग से दबा देते हैं, जिससे नमी बनी रहे।
- इस तरह अंकुरित पौधे, बेलों के रूप में पसरने लगते हैं और लगभग दो माह बाद अक्षया तृतीया (मई) तक फूल आने लगते हैं।
- गर्मियों में बेलों के तातों को आमने–सामने से मिला देते हैं ताकि आंधियों में बेलें इधर–उधर न बिखरें।
- दुबारा सिंचाई के लिये कुशल माली बुवाई के दो माह बाद ही लगभग 5 लीटर जल प्रत्येक थाले में, बेल के चारों ओर गहरा कूंड़ा (घेरा) बनाकर, डाल कर ऊपर से उसे रेत से ढ़क देते हैं।
- तरबूज व खरबूजों की बेलों पर लाल भृंग दिखाई देने पर उपलों की राख छानकर उस पर बुरक देते हैं।